भूत शुद्धि

हरे कृष्ण!!!

भिन्न-भिन्न प्रकार की लीलाओं के बारे में बताते हैं भगवान् की। हाँ, तो हम appreciate भी कर पाते हैं कुछ हद तक और फिर भूल जाते हैं। तो आज हमने सोचा कि वो चीज़ बताएँ जो कि 'अर्चन' सम्बन्धित है, और जो हमारे जीवन में अति-अति-अति आवश्यक है। अति आवश्यक। इसके बिना भक्ति शुरु भी नहीं होती है। अर्चन से भी मुख्यतः सम्बन्धित है यह। तो आज, हम यह बात जाने और अपना जीवन सदा-सदा के लिए कृतार्थ करें।

हरिभक्तिविलास में कहा गया है -

"ततः कृतांजलिर्वमि श्रीगुरुं परमं गुरुम्।
परमेष्ठिगुरुर्चेति नमेद गुरुं परम्पराम्।।"

(श्रीहरिभक्तिविलास-१.५.६०)

हरिभक्तिविलास कहती है कि अर्चन शुरु करने से पहले हमें अपने गुरुवर्ग..., गुरुवर्ग को प्रणाम करना चाहिए। अर्चन शुरु करने से पहले।

गुरुवर्ग में कौन होते हैं?

१) गुरु,
२) परम् गुरु,
३) परात्पर गुरु,
४) परमेष्टि गुरु।

चार गुरु होते हैं।

गुरुवर्ग तो हमें मालूम होना चाहिए कि हम पहले तो किस परम्परा में हैं और फिर हमारे गुरु, फिर उनके गुरु, फिर उनके गुरु और उनके गुरु। चारों का स्मरण करना है पहले, फिर अर्चन शुरु करनी है। हममें से कितने लोग करते हैं? हम तो कर सकते हैं। कई जगह पर तो यह करना सम्भव ही नहीं है, क्यों? क्योंकि आपको पता ही नहीं है कि आपके गुरु के गुरु के गुरु कौन हैं, क्योंकि इसके लिए आपको एक परम्परा में होना पड़ेगा। तो यह हरिभक्तिविलास, सनातन गोस्वामी यह बात बता रहे हैं। We are supposed to be followers of six Gosvāmīs। यह first step है अर्चन का।

Next step, next बात, यह बात बताया गया है-

"शरीराकारोभूतानां भूतानां यद्विशोधनम्।
अव्ययब्रह्मसम्पर्कद् भूतशुद्धिरियं मता।।
भूतशुद्धिं विना कर्तुर्जपहोमादिकाः क्रियाः।
भवन्ति निष्फलाः सर्व्वा यथाविध्यप्यनुष्ठिताः।।"

(श्रीहरिभक्तिविलास-२.५.६३, १.५.६४)

इसका मतलब है कि हमें साधना करने से पहले क्या करना चाहिए? "भूत शुद्धि" करनी चाहिए। *"भूतानां यद्विशोधनम्"*। एक-एक शब्द पर ध्यान दें कृप्या। सब attention यहाँ पर, भूल जाएँ अर्चन को। यह अर्चन करने से पहले समझें, करना कैसे है। "भूत शुद्धि"... किसकी शुद्धि? कौन भूत? हम भूत और कौन? हम इस पँच महाभूत से बने हुए हैं? इसकी शुद्धि। पहले चारों गुरुवर्ग को याद करना है फिर भूत शुद्धि करनी है। भूत शुद्धि कैसे होती है? कैसे होती है? भूत शुद्धि होती है - आत्मस्वरुप का चिंतन करके। हम अर्चन कर रहे हैं, किसकी? किसकी अर्चन कर रहे हैं? अप्राकृत मदनमोहन की। अप्राकृत कामदेव की। वो आप्राकृत हैं, Spiritual हैं, चिन्मय हैं, और हम अर्चन किससे करने लगे हैं? किससे करने लगे हैं? इस देह से। यह क्या है? Material, गंदा। यह... यह शुद्ध है कि अशुद्ध है यह देह? अमित, यह देह शुद्ध है कि अशुद्ध? क्यों है अशुद्ध?

वह तो, वह तो सूक्ष्म मन में है, भूत शुद्धि में तो gross body भी आता है, यह gross body में है क्या? One millimeter को खोल दें, तो कीड़े ही कीड़े नज़र आएँगे। और क्या नज़र आएगा? खून-पिशाब-टट्टी-बीक-पात ये सब... ये सब है। तो इससे तो भगवान् की अर्चन नहीं होती न। Spirit is served by Spirit... तो इसलिए हमने अपने भूत की..., यह पँच महाभूत से जो शरीर बना है, इसकी शुद्धि करनी है पहले। कैसे शुद्धि करनी है? आत्म स्वरुप का चिन्तन करके। फिर तो सेवा होगी..., नहीं तो सेवा कैसे होगी? वो तो भगवान् हैं और हम कौन हैं? मैं सुमित हूँ, मैं अमित हूँ, तो फिर तुम सेवा कैसे कर सकते हो? अमित, सुमित। वे तो नहीं कर सकते। उनका कोई अपना दास ही सेवा करेगा न?

तो हमें कैसे सेवा करना है? आत्मस्वरुप का चिंतन करके। क्या है हमारा आत्मास्वरुप?

नवद्वीप में - मैं गौरांग महाप्रभु का दास हूँ। तो जो महाप्रभु की अर्चन कर रहे हैं, बोलो मैं महाप्रभु का बारह (१२) वर्ष का एक ब्राह्मण बालक हूँ, जनेऊ है, सुंदर बालक हूँ। उस प्रकार से अपने आप को चिंतन करके starting करना है अर्चन।

दूसरा, मैं महाप्रभु का दास हूँ और राधारानी की दासी हूँ, मंजरी हूँ, प्रियनर्म सखी हूँ, यह चिंतन करना है। फिर उपासना प्रारंभ करनी है। इससे पहले उपासना प्रारंभ नहीं हो सकती, अगर हम षड्गोस्वामी का आनुगत्य कर रहे हैं तो...। वैसे कुछ भी कर सकते हैं। वैसे तो कुछ भी होता है। अगर हम proper तरीके से करना चाहते हैं...

आप सोचिए, Spirit is served by Spirit...? हम तो सेवा कर नहीं सकते, और यदि कई लोग बोलते हैं, आर्शीवाद दो कि जो..., जो हम..., जैसे मान लीजिए सद्परम्परा से नहीं जुड़े, वो बोलते हैं कि आर्शीवाद दो, कि हम भगवान् को प्राप्ति कर पाएँ। तो उनसे बोलें, कौन से भगवान् को चाहते हो? वो बोलेंगे - भगवान् कृष्ण। तो कृष्ण भी कौन से चाहते हो? ब्रज में तो अनेक प्रकार के कृष्ण हैं। यशोदानन्दन कृष्ण बिल्कुल अलग दिखते हैं; जो ललिता सखी के साथ कृष्ण हैं, वे बिल्कुल अलग दिखते हैं। जो राधारानी के साथ कृष्ण हैं, वे बिल्कुल अलग दिखते हैं। जिन कृष्ण को मंजरियाँ देखती हैं, वे बिल्कुल अलग होते हैं। सखा कृष्ण के साथ जो होते हैं, वो सखा के साथ जो कृष्ण होते हैं, वो कृष्ण बिल्कुल अलग दिखते हैं, बिल्कुल अलग।

तो हमको पहले जानना चाहिए कि हमारा कृष्ण से क्या सम्बन्ध है। अब हरिनाम कर रहे हो, कर रहे हो न? सेवा माँग रहे हो? बिना सम्बन्ध के कोई सेवा होती है किसी की? बिना सम्बन्ध के आज तक किसी ने किसी की सेवा की है? बिना सम्बन्ध के कोई सेवा करता है किसी की भी? तो हरिनाम से आप सेवा माँग रहे हो, हरिनाम से आपका सम्बन्ध क्या है? हरिनाम कौन हैं? हरिनाम करते हो, कौन हैं हरिनाम?

जब अपको हरिनाम दीक्षा मिली तो अपको साथ में एक paper मिला था। उसमें क्या लिखा हुआ है? हरिनाम कौन हैं?

"नाम चिन्तामणिरुपं नामैव परमागतिः।
नाम्नः परतरं नास्ति तस्मान्नाम उपास्महे।।
त्रिभंगभंगिमरुपं वेणुरन्ध्र-करांचितम्।
गोपीमंडलमध्यस्थं शोभितं नन्दनन्दनम्।।
गोपीमंडलमध्यस्थं शोभितं नन्दनन्दनम्।।"

"गोपीमंडलमध्यस्थं शोभितं नन्दनन्दनम्"। यह हमारा 'नाम' है, कौन हैं? गोपियों के मध्य में, 'गोपी-मण्डल', मध्य में। गोपियों का मण्डल है, उसके बीच में, *मध्यस्थं*, वहाँ पर क्या हो रहा है? शोभित हो रहे हैं। कौन? नन्द के पुत्र - "नन्दनन्दनम्"। आगे क्या हैं ये 'नाम'?

"नमो नलिननेत्राय", नलिनाक्षी, नलिन के समान नेत्र, lotus eyed one ! *"नमो नलिननेत्राय वेणुवाद्य-विनोदिने"*, वो कृष्ण जिनके आँखे जो हैं, कमल लोचन..., कमल नयन हैं, *"वेणुवाद्य-विनोदिने"*, जो वेणु निरंतर बजाते हैं। आगे, *"राधा-अधर-सुधापान-शालिने वनमालिने"*। वो कौन हैं कृष्ण? पहले तो वो *"गोपीमंडलमध्यस्थं"* हैं। कृप्या focuss बनाए रखें। फिर *"शोभितं नन्दनन्दनम्"।* वेणु..., वेणु बजाते हैं। आगे, *"राधा-अधर-सुधापान शालिने"*। राधारानी के जो, 'He is expert in sucking the nectar from the Lips of Rādhārānī', this is the Kṛṣṇa we worship. वे कृष्ण, जो राधारानी के अमृतसुधा पान करने में lips..., nectar coming from the Lips, Lotus Lips of Rādhārānī, वो पान करने में जो expert हैं, उन कृष्ण की हम उपासना करते हैं।

तो हमें जिस 'नाम' से हमारा सम्बन्ध क्या है? 'नाम' क्यों ले रहे हो तुम? तुम सेवा माँग रहे हो, किसकी माँग रहे हो? यह तो जानो पहले, 'नाम' तो कैसे लोगे 'नाम'? फ़ायदा क्या होगा वो 'नाम' लेकर? तो 'नाम' के साथ सबसे पहले सम्बन्ध होना ज़रुरी है। बिना सम्बन्ध के कोई 'नाम' नहीं सही तरह ले सकता, न ही कोई सेवा प्राप्त होगी। बिना सम्बन्ध के कुछ..., आपने आज तक किसी की सेवा की है? बताईए? आज तक किसी की सेवा की है? त्रिकाल में कभी भी?

अपनी बेटी की सेवा करते हो, क्यों? सम्बन्ध मानते हो। पति की..., क्यों? सम्बन्ध मानते हो। साथ वाले की तो नहीं करते हो सेवा? हाँ, तो सम्बन्ध मानोगे नहीं तो सेवा करोगे ही नहीं, तो इसलिए सबसे important है - सम्बन्ध-ज्ञान होना। जब हम साधुसंग करते हैं तो साधुसंग में सबसे पहले क्या चीज़ प्राप्त होती है? क्या प्राप्त होता है?

सम्बन्ध-ज्ञान : तुम कौन और कृष्ण कौन? कौन से कृष्ण की उपासना कर रहे हो? भूत शुद्धि इसी को कहा जाता है, कि मैं पूजा नहीं कर रहा, मैं भगवान् की दासी रूप में पूजा कर रही हूँ। जिन कृष्ण की हम उपासना कर रहे हैं..., जो सखा भाव में हैं, वो ये वाले कृष्ण की उपासना नहीं करेंगे, *"गोपीमंडलमध्यस्थं शोभितं नन्दनन्दनम्"* उनको ये कृष्ण की उपासना की ज़रुरत नहीं है, उनको साख्य भाव से मतलब है।

तो हमें मालूम..., exactly starting से होना चाहिए, कि हम क्या कर रहे हैं? यह मैं क्यों बोल रहा हूँ, यह अगली line मैं आपको बताऊँगा। यह बताया गया है कि -

"भूतशुद्धिं विना कर्तुर्जपिहोमादिकाः क्रियाः।
भवन्ति निष्फलाः सर्व्वा यथाविध्यप्यनुष्ठिताः।।"

अगर हम बिना भूत शुद्धि के कोई भी भक्ति की क्रिया करते हैं, कोई भी क्रिया..., क्या बता रहे हैं - जप, होम आदि, हम कोई भी भक्ति की साधना करते हैं, अर्चन करते हैं, वे सारी क्या होती हैं? *"निष्फलाः मताः"*, बिना भूत शुद्धि के सब निष्फल होती है, उसका कोई फल प्राप्त नहीं होता। बिना भूत शुद्धि के हम जो भी कार्य, क्रियाएँ करते हैं, अर्चन इत्यादि कुछ भी करते हैं। इतना important है यह, सोचिए। क्या हमने कभी सोचा है इस बारे में?

नृसिंह भगवान् के उपासक को इस प्रकार की भूत शुद्धि नहीं करनी है, *"गोपीमंडलमध्यस्थं"*। उसको कैसी भूत शुद्धि करनी है, जो नृसिंह भगवान् का उपासक है, वह कैसी भूत शुद्धि करेगा? 'मैं नृसिंह भगवान् का दास हूँ', यह भूत शुद्धि हो गई। गौरांग महाप्रभु की सेवा करते हुए, "मैं गौरांग महाप्रभु का दास हूँ", उसको *"गोपीमंडलमध्यस्थं"* नहीं करना। तो जिनकी उपासना कर रहे हैं, यह प्रारम्भ से ही मालूम होना अति आवश्यक है, नहीं तो *"निष्फलाः"*... *"निष्फलाः"* कैसे? अगर आप यह बताया जा रहा है, proper तरीके से अनुष्ठान भी करते हैं, शास्त्रों में बताए गए हैं..., proper मंत्र बोलते हो तब भी *"निष्फलाः सर्व्वा यथाविध्यप्यनुष्ठिताः"*। "यथा विधि", यथा विधिपूर्वक अनुष्ठान करते हो, वो भी क्या होगा? *"निष्फलाः मताः"*। वो सब निष्फल हो जाएगा बिना भूत शुद्धि के यदि हम कार्य करेंगे, भक्ति की कोई भी क्रिया करेंगे। कितना important है।

वास्तविक साधुसंग करते हैं तो हमें मालूम चलता है कि हरिनाम कौन हैं। वास्तविक साधुसंग यदि हम करेंगे, सद् परम्परा से जुड़े हुए साधुओं का, तो हमें भक्ति की सारी रहस्यमय चीज़े पता चलेंगी, नहीं तो भक्ति तो बहुत बड़ा रहस्य है। सारे रहस्यों में जीवन के, सबसे बड़ा रहस्य क्या है? भक्ति। हमें लग रहा होता है हम कर रहे हैं, परन्तु वास्तव में नहीं कर रहे होते। यह इतना महत्वपूर्ण है यह भूत शुद्धि।

आगे, भूत शुद्धि के बिना सारी क्रियाएँ जो हैं निष्फल हो जाती हैं। यह समझ आ रहा है सबको? अच्छा, यह भूत शुद्धि क्या होती है-

"चिन्तनमात्रेणेति पुरककुम्भकादिकं विना
केवलं भावनयैव देहशोधनादिकं कृत्वेत्यर्थः।"

गुरु प्रदत्त सिद्ध देह का चिन्तन ही भूत शुद्धि है।

जो गुरु ने सिद्ध प्रणाली दी है हमें, वह सिद्ध प्रणाली में जो स्वरूप बताया गया है कि आपका अमुक नाम है। आप जैसे मान लो अमीया मंजरी हैं, हाँ..., आपका स्वभाव है- समाधीरा या धीरामध्या, तो यह आपका सनातन स्वभाव है। आपका यह नाम है, आप यहाँ रहती हो, आपकी यह सेवा है, तो अपना उस प्रकार से चिंतन करना जिस प्रकार से गुरु ने सिद्ध प्रणाली दी है, यही यथाविधि चिंतन करना ही भूत शुद्धि है। यह starting की बात है। अर्चन कब करनी है हमने? रोज़... रोज़ करनी है और रोज़ करने से पहले क्या करना है? भूत शुद्धि। और भूत शुद्धि वास्तव में कैसे होती है? गुरु-प्रदत्त सिद्ध देह से, गुरु-प्रदत्त सिद्ध देह के चिंतन से।

जिनको गुरु-प्रदत्त सिद्ध देह नहीं प्राप्त है, जिनको केवल मंत्र भी प्राप्त हैं, तो वास्तव में अगर ढंग से देखा जाए तो वह भी..., उनकी भी भूत शुद्धि हो रही है - कैसे...कैसे? *"विद्महे"*। *"विद्महे"* मतलब- मैं जानता हूँ। *"विश्वम्भराय धीमहि"*। पहले *"विद्महे"*, मतलब, मैं जानता हूँ, जानता हूँ तभी तो ध्यान कर रहा हूँ आपका इस रूप में। *"विश्वम्भराय धीमहि"*। इस रूप में ध्यान कर रहा हूँ आपका। अच्छा ध्यान करूँ तो कृपा क्या कर देना? मुझे अपनी कृपा पूर्वक अपनी प्रेम भक्ति दान कर देना। तो क्या हो गया? *"विद्महे"* मतलब सम्बन्ध और वो..., *"धीमहि"*, मतलब - अभिधेय, *"प्रचोदयात्"* मतलब प्रयोजन। सम्बन्ध, अभिधेय, प्रयोजन। तीनों गायत्री में आ जाते हैं। तो जब हमें मंत्र दीक्षा प्राप्त होती है तो, मैं जानता हूँ, यह नहीं कि मैं गायत्री मंत्र बोलता हूँ, नहीं-नहीं, बोलने से नहीं होगा काम।

गायत्री मंत्र meaning को अच्छी तरह समझ के गायत्री मंत्र मानसिक रूप से उच्चारण करना है। समझ रहे हैं बात को? मैं जानता हूँ, जानता हूँ कौन हो आप - *"त्रिभंगभंगिमरूपं"*- अच्छी तरह जानता हूँ कौन हो। *"कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन-वल्लभाय"*- ये हो। अच्छी तरह इनको, इनको स्वाहा करता हूँ, इनकी सेवा में नियुक्त होता हूँ। पहले तो सम्बन्ध होगा न, सेवा में नियुक्त तो..., कैसे सेवा में नियुक्त होओगे? अब Bill Gates के पास चले जाओ..., बोलो - "मैं सेवा में नियुक्त होता हूँ तुम्हारी। तुम कौन हो?" पता नहीं। अच्छा सेवा में कैसे नियुक्त होते हो, यह तो सिर्फ words बोल रहे हो, है न? They are just words, हरे कृष्ण, हरे कृष्ण..., वह तो ठीक है, कैसी सेवा? वो नहीं पता मुझे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण। No, this हरे कृष्ण won't really help... *निष्फलाः*। तो गुरु-प्रदत्त सिद्ध देह का चिंतन अनिवार्य है।

रूप गोस्वामी ने अपने सूत्र-उपासना-वैष्णवपूजाविधि ग्रन्थ में लिखा है-

"प्रथमतः राधाकृष्णस्मरणम्।
आसनोपरि उपविश्य सिद्धदेहं भावयेत्।।"

(सूत्र-उपासना-वैष्णवपूजाविधि ग्रन्थ १)

सबसे पहले क्या करो? राधाकृष्ण का स्मरण। फिर- *"आसनोपरि उपविश्य सिद्धदेहं भावयेत्"*, फिर आसन पर बैठ कर क्या करो? सिद्ध देह की भावना करो। गुरु-प्रदत्त सिद्ध देह की भावना करो। यह नहीं बोल रहे कि कर लो न please..., नहीं। Order दे रहे हैं, करो। तभी उपासना प्रारम्भ होगी ठीक से, यथा विधि। कितना महत्वपूर्ण है यह चीज़।

इसलिए कई लोग ऐसे सोचते हैं कि यह तो बड़ी ऊँची भक्ति है, यह तो पता नहीं कब करेंगे। अरे! यह starting में करना है - सिद्ध देह...। बोलते हैं - बीस (२०) साल के बाद सिद्ध देह की बात करेंगे, बीस साल के बाद नहीं, हम बीस दिन से पहले चाहते हैं सिद्ध देह। दीक्षा के बीस दिन के अंदर हम सिद्ध देह चाहते हैं। बीस साल किसने देखे हैं? क्यों? अर्चन करनी है? दीक्षा के बाद अर्चन करे बगैर गाड़ी नहीं चलेगी? और अर्चन बिना सिद्ध देह के चिंतन के हो नहीं सकती, सही रूप से। तो सिद्ध देह कब चाहिए होगा? तुरंत, अभी। We should be crying, weeping, wailing..., I want my सिद्ध देह, I want my eternal स्वरूप। यह केवल मंजरी भाव की परम्परा में ही, सिद्धि से पहले, सिद्धि प्राप्त होने से पहले अपना सिद्ध स्वरूप के बारे में सब कुछ पता चल जाता है। केवल मंजरी स्वरूप साधना में ही।

अब प्रश्न यह उठता है कि हमें तो सिद्धि सिद्ध प्रणाली से मिलेगी, तो जो अन्य रसों में हैं उनको सिद्ध प्रणाली मिलती..., उनको तो नहीं मिलती, फिर उनकी सिद्धि कैसे होगी? जैसे जो साख्य भाव में हैं, या गोपीभाव, निम्बार्क सम्प्रदाय में हैं, निम्बार्क में गोपीभाव होता है, तो उनको तो प्रणाली नहीं मिलती, तो उनकी सिद्धि कैसे हो जाएगी? मंत्र reveal कर देंगे?

केवल मंजरी भाव के अन्दर ही यह परम्परा द्वारा स्थापित है कि इसमें सिद्ध प्रणाली की आवश्यकता है और सिद्ध देह का चिंतन करना होता है। अब हमें सिद्ध प्रणाली जो है मंजरी भाव की प्राप्त होगी, नवद्वीप का नहीं मिलेगा। नवद्वीप में क्या होगा? मंत्र reveal करेंगे। उसी प्रकार से अन्य रसों में भी मंत्र reveal करते हैं। परन्तु नवद्वीप में भी हमें क्या चिंतन करना है - कि मैं बारह वर्षीय ब्राह्मण बालक हूँ, सेवक हूँ, किशोर हूँ। किशोर देखने में हूँ, हूँ बारह साल का। यह हमारे को..., ये bascis हैं सोचिए, bare

bascis हैं, हैं कि नहीं यह bare bascis? और जिसकी मंत्र दीक्षा ही नहीं हुई तो वह तो कोई offering ही नहीं कर सकता। जिसके परिवार में एक की भी मंत्र दीक्षा नहीं, तो कभी offering ही नहीं होती है घर में। तो हमें तो, मंत्र दीक्षा, साथ में प्रणाली दोनों की अति आवश्यकता है, तब जाकर भक्ति सुचारु रूप से प्रारम्भ होगी।

नरोत्तम दास ठाकुर ने बताया है-

"हरि हरि कि मोर करम गति मन्द।
ब्रजे राधाकृष्ण पद ना भजिनु तिल आध, ना बुझिनु रागेर सम्बन्ध।।"
(प्रार्थना २ - श्रील नरोत्तम दास ठाकुर)

मेरे कर्म की गति कितनी मंद है, कितनी slow है। *"ब्रजे राधाकृष्ण पद ना भजिनु तिल आध, ना बुझिनु रागेर सम्बन्ध"*, मुझे रागेर सम्बन्ध ही नहीं मालूम मेरा क्या है। मैं 'नाम' ले रहा हूँ, मुझे सम्बन्ध ही नहीं मालूम मेरा कृष्ण से क्या है। सोचिए। मैं किसी को पुकार रहा हूँ पर यह नहीं पता किसको पुकार रहा हूँ। दिन-रात पुकार रहा हूँ। कितने साल से morning programme करते हो? सात (७) साल से। 'किसको' पुकार रहे हो, वह नहीं पता..., "मैं अभी morning programme strong कर रहा हूँ।" अरे, पुकार किसको रहे हो? "वह समय आने पर पता चलेगा, गुरु reveal करेंगे किसको पुकार रहे हो।" क्या बोल रहे हो भाई? भूत शुद्धि नहीं हुई न इसलिए भूत चढ़ा हुआ है तुम्हें, तुम भूत की तरह बात कर रहे हो। जब भूत चढ़ता है तो क्या करता है व्यक्ति? Normal बात नहीं कर सकता, यह वही बात है - "अपने आप पता चल जाएगा।" अरे क्या पता चलेगा? क्या पता चलेगा अपने आप?

हर साधना के अलग मंत्र होते हैं। अगर हम सखा बनना चाहते हैं, उसके अलग मंत्र हैं। अगर हम गोपी बनना चाहते हैं, उसके अलग मंत्र हैं। मंजरी भाव की साधना के अलग मंत्र हैं। जो बनना चाहते हो, जैसा सम्बन्ध चाहते हो, वैसे गुरु से दीक्षा प्राप्त करो। वैसे मंत्र प्राप्त हों और वो भूत शुद्धि करके अर्चन प्रारम्भ करनी है। और भूत शुद्धि करके ही जप भी करना है, नहीं तो जप कैसे करोगे? आप जप कर रहे हो - हरे कृष्ण, हरे कृष्ण - भगवान् मुझे सेवा में लगाओ। भगवान् बोल रहे हैं - तुम कौन, मैं कौन... वह दोनों में से कुछ नहीं पता, बस सेवा में लगाओ। सेवा में कैसे लगोगे? इतना आवश्यक है यह चीज़।

तो इसलिए बताया गया है। *"आदिकाः"*- जो भी क्रिया करेंगे भूत शुद्धि के बिना, वे सारी निष्फल होंगी, जो भी क्रिया करेंगे। चाहे जप करें, चाहे अर्चन करें, चाहे आप

गायत्री करें, कुछ भी करें भूत शुद्धि करके। यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं गायत्री कर रहा हूँ - हाँ, तरुण गुप्ता या तरुण आनन्द, मैं गायत्री कर रहा हूँ। अरे तरुण आनन्द ने कोई गायत्री नहीं करनी। वह तो भौतिक व्यक्ति है। यह आध्यात्मिक है। इनकी सेवा कौन करेगा? एक आध्यात्मिक व्यक्ति। कैसे होती है? मंत्र द्वारा उपासना होती है। Spiritual व्यक्ति उपासना करेगा मंत्र द्वारा भगवान् की, ऐसी होती है सेवा। भूत शुद्धि हुई तो मैं भी spiritualize हुआ और मंत्र मिले हैं तो spiritualize तो starting हो ही गई है हमारी। तो जितने शुद्ध होंगे, उसी मात्रा में हम लोग Spiritual होते जाएँगे। जिसको भी मंत्र दीक्षा मिली है, वह spiritualize तो उसको start हो गया है, थोड़ी मात्रा में। और जितना शुद्ध होओगे, उतना body spiritualize होता रहेगा। जो भाव की अवस्था में पहुँच गया, उसका चित्त-मन, सब चिन्मय हो जाता है, Spiritual, देखने में ऐसा ही शरीर है परंतु सब कुछ Spiritual है। ये भी देखने में, ये भी देखने में लग रहे हैं, कहीं से भी Spiritual? Photo लग रही है न। पर पूरे Spiritual... उसी प्रकार से जो भगवान् के शुद्ध भक्त होते हैं, जो भाव के स्तर पर हैं, वे पूरे..., चिन्मय होता है उनका चित्त-मन, देखने में नहीं लगता। और जो प्रेम की अवस्था में होते हैं, उनका यह देह भी जो होता है, वह भी पूरा चिन्मय होता है।

तो "रागेर सम्बन्ध"- यह दो प्रकार से समझा जाता है, कि राधारानी, ललिता आदि सखी, रूप मंजरी, इनका क्या सम्बन्ध है कृष्ण से? कैसा सम्बन्ध है इनका कृष्ण से? रूप-रति मंजरी का, ललिता-विशाखा का..., इनका सम्बन्ध कैसा है? *"रागेर सम्बन्ध"*, और हमारा सम्बन्ध कैसा है कृष्ण से, राधारानी से, रूप-रति मंजरी से। तो ये जानना प्रारम्भ से अति-आवश्यक है, नहीं तो हम रूप मंजरी को कैसे पुकारेंगे? जैसे वो भजन है- *"श्रीरूप मंजरी पद"* - यह भजन गा ही नहीं सकते हृदय से, बोल ही नहीं सकते, जब तक हमारी भूत शुद्धि न हम करें। कि मैं मंजरी ही नहीं तो मुझे रूप मंजरी का क्या करना हैं? बताओ। I should be a मंजरी, तभी तो मैं प्रार्थना करुँगी। Crying...

हमारा जप कैसे होगा crying session? किसके लिए cry करेंगे हम? जैसे मान लो आपको सेवा पता चल गई कि आपकी कुंज में lighting की सेवा है, आलोक सज्जा की आपकी सेवा है कुंज के अन्दर, तो आप प्रार्थना करते हुए करोगे कि मुझे अपनी सेवा में लगाओ, देखो आपको कुंज में लीला तो करोगे, lighting कौन करेगा? मैं करुँगी। मुझे सेवा में लगाओ, मुझे सेवा में लगाओ। किसी की सेवा है चंदन की, तो बोलेंगे - अभी आप रास-विलास करोगे, फिर चन्दन चाहिए होगा, वह कौन करेगा? मैं करुँगा। थोड़ा सा ही सेवा में लगा दो न। तो जप करते हुए..., तभी हृदय से जप होगा। जब गरु प्रदत्त सिद्ध

देह होगा और मैं कौन से nature की हूँ, वह भी हमें पता चलना चाहिए। जैसे आप पुस्तक में पढ़ते हो, कई बारी कृष्ण को बाहर निकाल देती हैं मंजरियाँ। सारी बाहर नहीं निकालती हैं। कई बहुत ही प्रखरा स्वभाव की होती हैं, तीखी, तीखी मंजरियाँ। कई बहुत ही mild स्वभाव की होती हैं, very soft... कई होती हैं मध्या- not very soft and not very hard and sometimes very hard... तो अपना स्वभाव हमें मालूम होना चाहिए। यह गुरु बताते हैं। अपने चिंतन से वे एकादश भाव देते हैं। तो यह जप करने से पहले भी बहुत ज़रुरी है, अर्चन करने से पहले भी, गायत्री करने से पहले भी। अगर हम यह नहीं कर रहे और सालों से माला पकड़ी हुई है, तो हम, हम वाकई में भूत ही हैं हम लोग। भूत शुद्धि नहीं कर रहे, तो भूत ही हैं। पागलपन का भूत चढ़ा हुआ है।

"रागेर सम्बन्ध" नहीं जानना अपना बस, यहीं जो माँस हड्डी पुतले के जो तीन-चार, पाँच-सात लोग आसपास रहते हैं, उसी में संतुष्ट हैं। तो क्या हम, कैसे advanced होंगे? भूत शुद्धि..., यह जो भूत चढ़ा हुआ है, इसकी शुद्धि। यह पँच महाभूत का शरीर है, इसकी शुद्धि, अति आवश्यक है।

जैसे स्तर बताया जाता है - *'आदौ श्रद्धा'*, फिर? *'साधुसंग'*। साधुसंग होगा, साधुसंग के बाद, *'भजन क्रिया'*, उसके बाद... पहले भजन क्रिया होगा, फिर 'अनर्थ निवृत्ति', फिर रुचि, आसक्ति, भाव, प्रेम। ठीक है? अब कोई बोलता है कि भाव के स्तर पर होंगे न, तब मंजरी का नाम लेना। अरे, भाव के स्तर पर पहुँचेंगे कैसे? उससे पहले रुचि भी तो होगी। रुचि किसमें होगी? भगवान् में और खुद में। अपने स्वरुप में रुचि जागृत हो रही है, फिर आसक्ति किससे हुई? भगवान् से और अपने स्वरुप से आसक्ति हो गई, छोड़ नहीं सकते उसको। रुचि, आसक्ति फिर 'स्थायी भाव' फिर 'प्रेम', तो रुचि तो प्रारम्भ भी नहीं होगी। भजन क्रिया के लिए भूत शुद्धि चाहिए। भजन क्रिया करनी है न जब, उसके लिए भूत शुद्धि चाहिए। भूत शुद्धि लेकर जब भजन क्रिया करेंगे, भक्ति करेंगे, साधना करेंगे, तो lust जाएगी। यह नहीं कि lust जाने के बाद राधा का नाम लेना। No!

जब तक हमारा कोई belief system नहीं होता, तब तक हम क्या material life में भी कुछ कर सकते हैं? आप fully मानते हो न कि आप Vikas हो, तभी रोज़ Karol Bagh जाते हो न? और fully मानते हो कि husband हो, और किसी के पुत्र, fully belief system है, तभी material life में कुछ भी क्रिया हो रही है, ठीक बात है? नहीं तो क्रिया कैसे होगी? मान लो मैं अपने को पागल हूँ, मैं कुछ मानता ही नहीं, क्रिया कैसे करुँगा? तो एक belief होना ज़रुरी है material life में भी कुछ भी क्रिया करने के लिए।

तो यह belief system इन्होंने बनाया हुआ है- मैं पत्नी हूँ, मैं माँ हूँ, मैं बहू हूँ, तो फिर कार्य हो रहे हैं। जब material life में कोई कार्य नहीं होता बिना belief system के, तो spiritual life में कैसे कार्य हो जाएगा बिना belief system के कि मैं कौन, भगवान् कौन? प्रारम्भ से ही full conviction होना चाहिए कि भगवान् कौन हैं, जिनकी मैं उपासना कर रही हूँ। ये ladies को नहीं सोचना कि मैं किसकी उपासना कर रही हूँ मैं, gents जो हैं उनको भी यही सोचना है कि मैं, मैं किनकी उपासना कर रही हूँ, स्त्री भाव में ही सोचना है, गोपीभाव में-

"अतएव गोपीभाव कोरि अंगीकार।
रात्रिदिने चिंति राधाकृष्णेर विहार।।
सिद्ध देहे चिंति करि ताहाई सेवन।
सखी भावे पाय राधा कृष्णेर चरण।।"

(श्री श्री चैतन्य चरितामृत् मध्य लीला ८.२२८-२२९)

इसलिए गोपीभाव अंगीकार करो। कब? प्रारम्भ से, *"रात्रि दिने करे राधा कृष्णेर विहार"*, राधा कृष्ण का चिंतन करो, कैसे चिंतन करो?

"मने-निज सिद्धदेह करिया भावन।
रात्रिदिने करे व्रजे कृष्णेर सेवन।।"

(श्री श्री चैतन्य चरितामृत् मध्य लीला २२.१५७)

मन से चिंतन करो। कैसे? *मने-निज सिद्धदेह।* यह नहीं बोला, अपने आप को मंजरी मान लो केवल, नहीं। निज मतलब, अपना सिद्ध देह, अपना। अपना कौन से वाला? जो गुरु देते हैं, जो यह एकादश भाव, सिद्ध प्रणाली देते हैं, *मने-निज सिद्धदेह करिया भावन,* इस भावना से रात्रि-दिन चिंतन करना है। अष्टकालीय लीला चिंतन करना है हमने। आप बताओ किसी का लीला चिंतन कर सकते हो जब आप उसमें involved ही न हो। लीला चिंतन छोड़ो, किसी की, किसी की भी कहानी सोच सकते हो दिन-रात जब आप उसमें involved ही न हो। तो कब से चाहिए अपना सिद्ध..., सिद्ध स्वरूप बताईए? प्रारम्भ से। *रात्रि दिने करे राधाकृष्ण...,* करे कैसे करूँ भाई और क्यों करूँ, क्यों करूँ भाई, मुझे क्या मिलेगा? हाँ। तुम्हारी सेवा है, सेवा करो, मानस सेवा करो।

आठ (८) प्रकार की मूर्ति होती हैं, यह एक प्रकार की मूर्ति हैं - विग्रह। आठ प्रकार की मूर्ति में एक होती हैं - मनोमयी मूर्ति। ग्यारहवें स्कन्द में बताया गया है आठ मूर्तियाँ होती हैं आठ प्रकार की, उसमें से एक मन में मूर्ति का निर्माण करें कि यह कृष्ण हैं,

'श्यामसुंदर', जो कि रो रहे हैं, राधा क्यों नहीं आ रही, क्यों नहीं आ रही, मुझसे नाराज़ हो गई हैं। हाँ, और फिर मैं खड़ी हूँ, "श्याम चिंता मत करो मैं लेकर आऊँगी, तुम चिंता मत करो।" इस प्रकार से हम मनोमयी मूर्ति में, वासनामयी मूर्ति में चिंतन कर रहे हैं और साथ में क्या कर रहे हैं? सेवा। चिंतन करके क्या होगा? भक्ति किस धातु से बनी है? भज् धातु। भज् धातु मतलब "सेवा"। तो चिंतन करना है सेवा..., सेवा अभिलाषा के साथ। सतत सेवा करनी है, चिंतन में।

प्रश्न यही है, कि इस समय राधाकृष्ण कहाँ हैं और मैं सेवा क्या कर सकती हूँ? बस यह प्रश्न है। हर समय अपने आप से यह ही पूछें। क्या time है? रात के दो (२) बजे हैं, वो सोएँगे नहीं, वो कहाँ हैं? वे गोविन्दस्थली में हैं। They are having honey wine. ठीक है मेरी सेवा क्या है? O... let me have सुवासित वारि - शरबत। अभी विलास है, विलास तो हो गया, may be new माला। जो सेवा दी गई है, उस पर मनन हो जाएगा। एक तो लीला चिंतन होगा, गुटिका के अनुसार, भावनासार संग्रह, साथ में अपनी सेवा चिंतन। *"सेवा सदा करियो अभिलाषा"*, सेवा की अभिलाषा सदा करनी है। अक्षर नहीं बोलने- हरे कृष्ण, हरे कृष्ण। तभी तो थक जाते हैं Chanting करके और जब लीला चिंतन के साथ Chanting होती है तो रोज़ ढ़ाई (२.५) minute, तीन (३) minute में Chanting, रसमयी Chanting...। एक होती है - dry Chanting..., जैसे हमारे dry heart हैं। एक होती है - रसमय Chanting.

कृष्ण रस स्वरूप है, तो उनकी सारी चीज़े रसमय होती हैं। वास्तव में भक्ति शुरु से ही रसमय है, आनन्द से भरी हुई है, starting से, यह हैरानगी हो रही होगी हमको। सही तरह करेंगे, तो starting से रसमय है, सही तरह करेंगे तो। गन्ना है, गन्ना end में आकर मीठा होता है क्या? वह starting से ही मीठा रहेगा। मिसरी है, कहीं से पकड़ लो उसको, वो मीठी ही रहेगी। तो सही तरह पकड़ें तब न, हमने मिसरी को पहले कागज़ से बांध दें उसके बाद पकड़ लें उसको फिर तो वह dry ही आएगा सब कुछ।

Chanting कैसे कर सकते हैं, जब तक हमारे को अपने स्वरूप का भान नहीं होगा, कृष्ण के स्वरूप का भान नहीं होगा? भान means awareness! Not awareness..., clarity. Without me, Kṛṣṇa Your sewa is incomplete, so kindly engage me in Your service. I am a very integral part of Your Līlā. क्यों? क्योंकि आपकी ही मंजरी ने मुझे मंजरी बनाया है, मेरी गुरु मंजरी ने मुझे स्वरूप दिया है। तो कृपा कर के अब तो कृपा करें। माना मैं खराब हूँ, भला हूँ, बुरा हूँ, कृपा करो राधे।।

हमने हमारे गुरुदेव को बताया कि, "गुरुदेव कुछ लोग बोलते हैं हमारे यहाँ सारे रस मिलते हैं।" बाबा कहते हैं, गुरु महाराज कहते हैं - "बनिये की दुकान में सब कुछ मिलता है।" परम्परा में तो एक ही चीज़ मिलती है, परम्परा किसकी है, भाव की परम्परा है, एक भाव है। हम यहाँ किसके पीछे आए हैं? मंजरी भाव के पीछे। उसी प्रकार से सखा भाव की परम्परा होती है, गोपी भाव की परम्परा होती है, मंजरी भाव की परम्परा होती है। तो परम्परा एक ही चीज़ की होती है। खिचड़ी नहीं होती परम्परा में कभी भी, cocktail नहीं होती परम्परा। परम्परा का मतलब है - पर-पर-पर, जो मेरा गुरु है, वहीं उनके गुरु का भी वहीं भाव, उनके गुरु का भी उनके गुरु का भी वह सीधा भगवान् तक जाता है। तो सबका एक भाव है, इसको परम्परा कहते हैं।

हमको अपनी सारी चेतना जिस भूत, पँच महाभूत में डाली हुई है, इससे निकाल कर जो गुरु सिद्ध देह देंगे उसमें डालनी है, यह सारी game है। This is a Spiritual game, इससे निकाल के इसमें डालना है। बस identity दो (२) हैं। जैसे मान लो यह तरुण, यह तरुण में सारी चेतना डाली हुई है, अब तुलसी दास में डालनी है चेतना। सारी। यहाँ से उठा कर यहाँ पर डालनी है, सारी चेतना डालनी है, यह सारा game है। यह belief system तोड़ना कि मैं तरुण हूँ या मैं, यह मुश्किल है? मन में आवाज़ आएगी- "इतना आसान नहीं है।" फिर ऐसे सोचेंगे तो क्या होगा? मुश्किल हो जाएगा। यह आवाज़ कहाँ से आई थी? यहाँ से आ रही है। तो क्या हो गया very easy, ultimately its all here (in the mind)... मुश्किल कहाँ है? यहाँ। आसान कहाँ है? वो भी यहाँ है। जो बात बोलोगे, वो echo करना शुरु कर देगी। बहुत मुश्किल है, बहुत मुश्किल है, बहुत मुश्किल है, बहुत मुश्किल है, पता है बहुत मुश्किल है, फिर जैसे ही साधुसंग मिल जाएगा so called... पता है, हाँ बड़ा मुश्किल है। यहाँ डाला होगा। अरे बहुत आसान है, और देखो वो भी तो कर रहे हैं, तो वैसा ही साधु संग मिलेगा। अच्छा साधुसंग, correct साधुसंग। हाँ बहुत आसान है, कुछ भी तो नहीं करना।

और मानस सेवा तो बाद में होगी, पहले तो भूत शुद्धि होगी, भूत - पँच महाभूत की शुद्धि होगी। पहले gross body से सेवा ठीक होगी फिर मानस सेवा। Gross body को पहले सिद्ध देह की भावना करानी होगी, फिर अर्चन, फिर जप, सोएँ भी वैसे, उठें भी वैसे, जितना हो सके वैसे सिद्ध स्वरुप में ही रहे, इसमें आएँ ही न, यह भूत में।

जब भूत चढ़ता है तो क्या कार्य करते हैं? Unnatural कार्य। इस समय हम कौन से कार्य मंजरी के स्वरुप के अनुभूत, अनुसार कर रहे हैं? एक भी नहीं, तो सारे कार्य क्या हैं? Unnatural ! भूत चढ़ा हुआ है। इसलिए इस भूत की शुद्धि करनी है। भूति शुद्धि,

भूत शुद्धि, भूत शुद्धि। यह ही हमने real ego develop करनी है। क्या real ego develop करनी है? कि मैं महाप्रभु का दास हूँ, मैं गुरुवर्ग का दास हूँ, मैं अपने गुरुदेव का दास हूँ, मैं वैष्णवों का दास हूँ। तो ego ही तो पुष्ट करनी है, तो करो न खूब। बोलते है न ego कम करो। नहीं पूरी और ego बढ़ाओ। कौन कहता है ego कम करनी है? और जितनी बढ़ा सकते हो बढ़ाओ, सही जगह पर।

मैं महाप्रभु का दास हूँ।

मैं जाह्नवा माता की परम्परा में हूँ।

मैं नित्यानन्द परिवार का हूँ।

मैं वैष्णवों का दास हूँ।

बढ़ाते रहो ego, कौन मना कर रहा है? Real ego develop करना है। यह होता है real ego. सुना था यह real ego शब्द बहुत बार। अब समझ में आया, क्या होता है real ego? This is real ego, मैं राधारानी की दासी हूँ, बहुत sweet nature की हूँ, बहुत सुन्दर हूँ। यह भाव का चिंतन करना है।

"अतएव गोपीभाव करि अंगीकार,
रात्रि दिने चिंते राधाकृष्णेर विहार,
सिद्ध देहे चिंति करे ताँहाई सेवन....."

सिद्ध देह का चिंतन करो, करो सेवन, फिर क्या होगा? *"सखी भावे पाय राधा कृष्णेर चरण"*..., जो सखी भाव से चिंतन करेगा, उसको क्या मिलेगा? *"राधा कृष्णेर चरण"*। उसी को मिलेगा। जब सखी भाव से चिंतन ही नहीं किया, जप ही नहीं किया, उसको क्या मिलेगा अंत में? जो किया था, वही मिलेगा। Confusion है पूरी life long की है, तो end में क्या मिलेगा? Confused state... simple!

हम बोलते हैं कि, "भाई, हम रूपानुगा हैं।" अच्छा, यह एक व्यक्ति हुए हैं रूप गोस्वामी, वो बोल रहे हैं - "भाई, *'भूतशुद्धिं विना निष्फलाः सर्व कार्य'*" तो तुम करते हो भूत शुद्धि? "नहीं।" वो बोल रहे हैं, "चार गुरु मालूम हैं?" तुम को मालूम हैं चार गुरु? "हमें नहीं मालूम।" अच्छा, "और सिद्ध देह की भावना करते हो?" "नहीं हम नहीं करते", "तुम्हारे यहाँ कोई सिद्ध देह दे सकता है?", "नहीं, हमारे यहाँ कोई नहीं..., हमारे यहाँ कोई नहीं दे सकता"। तो तुम रूपानुगा कैसे हुए फिर? बोलने से हो जाओगे?

कल को तुम बोलो मैं Bill Gates हूँ तो हम तुम्हें Bill Gates मान लेंगे क्या? बोलने से काम हो जाते हैं? Action speaks louder than words... यह हैं रूप गोस्वामी के आज्ञा अनुसार भक्ति करना। बोलने से कार्य होते तो बात ही क्या थी? फिर तो कभी कोई दुकान पर भी जाते, मैं जी Bill Gates हूँ, मैं अरबपति हूँ..., ठीक है बैठे रहो घर पर, देखो क्या होगा इसके बाद, रोटी भी नहीं खा पाओगे। इसलिए हम spiritually... लोग भक्ति क्यों छोड़ते हैं? क्योंकि dry जीवन हो जाता है, प्राप्ति कुछ हो नहीं रही और executions लगता है, कर रहे हैं भक्ति। It becomes so dry, you can see faces...

हमारा जो मार्ग है, मंजरी भाव साधना या महाप्रभु का आनुगत्य, यह त्याग का मार्ग है या वैराग्य का? हमने समझना नहीं है, हम होने चाहिए भगवान् के दास। इसलिए दीक्षा मिलना सांस लेने से भी ज़्यादा ज़रूरी है, दीक्षा प्राप्त होना। क्यों? अरे कुछ relation ही नहीं है बिना दीक्षा के। मंत्र से तो relation होता है। स्वरूप शक्ति की वृत्ति, भगवान् से गुरु परम्परा से flow करती हुई, गुरु से हमारे हृदय में आती है, मंत्र के द्वारा, सद्परम्परा से। तो वैराग्य कैसे होगा, जब हमें सद्परम्परा से दीक्षा मिलेगी और फिर सिद्ध देह मिलेगा। तो सारी हम चेतना transfer किसमें करेंगे? सिद्ध देह में, तो वैराग्य कहाँ से हो जाएगा? इससे। बोले हैं, "मेरा वैराग्य नहीं हो रहा..." अरे सही जगह डाली ही नहीं, तो वैराग्य किससे, क्यों होगा। बोले, "मैं यहाँ से कदम नहीं उठा पा रहा।" आप आगे कदम रख रहे हो? "नहीं वह भी नहीं रख रहा।" हाँ, तो कैसे..., कैसे उठाओगे कदम यहाँ से? Are you getting my point? "You know, I am stuck up here..." I agree, ok, so, why don't you move there? Where? "वो तो मुझे पता ही नहीं है।" सिद्ध देह, सिद्ध देह में जाओ।

जब हम अपनी चेतना सारी material देह से सिद्ध देह में transfer कर देंगे, अपने आप यह..., wife से, बच्चों से, पति से सबसे वैराग्य आ जाएगा, material life से। जब सिद्ध देह, सिद्ध देह में चेतना सारी transfer करेंगे otherwise वैराग्य आना असम्भव है। अ-संम्भव, बोलने से नहीं आ जाएगा। और कुछ अज्ञान..., अज्ञान में अगर हम रहते हैं, तो हम यह सोचते हैं, तो हम सोचते हैं कि वैराग्य का मतलब होता है dry जीवन। Dry जीवन नहीं होता। वैराग्य का मतलब होता है - रसमय जीवन, रसमय। वैराग्य किससे? दुःखों से। दुःख का पिटारा कौन? यह भूत..., भूत, पँचमहाभूत का देह। यह है दुःख का पिटारा, इससे वैराग्य..., और कहाँ पर attachment? रुचि, आसक्ति कहाँ पर? अपने सिद्ध देह में। तो जीवन कैसा होगा? कैसा होगा जीवन? रसमय जीवन। लोग सोचते हैं कि जो वैराग्य है वह बड़ा ही dry जीवन है - "अरे यार यह भी छोड़ दो...।"

अरे यह क्यों नहीं देखते हो कितनी चीज़े पकड़ रहे हो अच्छी-अच्छी। वो बोले कि, "भाई, तू यह building में चली जा", वह बोले, "मैं अपनी रेड़ी छोड़ दूँ? मैं गंद खाना छोड़ दूँ? अरे its just like that..., unnecessary attachment to certain foolish things for no reason... Unnecessary! There is no logic.

यह जो हमारे thoughts हैं, न इनका कोई माँ है न इनका कोई बाप है, ये स्वयं ही, ये अपने आप कहीं से भी प्रकट हो जाते हैं और हमें destroy कर देते हैं पूरा। Thought ही तो हैं कि मैं किसी का पति हूँ, भाई हूँ, बंधु हूँ, यह thoughts ही तो हैं कि मैं राधारानी की दासी हूँ। क्या किया क्या आपने बताओ? कुछ भी नहीं लगा। और you become a millionaire. कुछ भी नहीं करना, मानस सेवा, मानस सेवा के लिए भूत शुद्धि, भूत शुद्धि के लिए दीक्षा, सिद्ध प्रणाली, सिद्ध प्रणाली के लिए दीक्षा। दीक्षा नहीं मिलेगी तो हमारा spiritual life will always be in rickshaw...

आप यह सोचिए कि जब कोई बहुत बड़ी building बनानी होती है तो जैसे मान लो कोई १०२ storey की building बनानी है Paris में, तो पहले जो बनाने वाला होता है, वह क्या करता है? Architect पहले conceptualise करता है कि मेरी building ऐसी होगी। Shape कहाँ पर देता है सबसे पहले? (मन में।) उसके बाद वह physical रूप धारण करती है। ठीक उसी प्रकार से, हमने shape यहाँ देनी है, कि मैं मंजरी हूँ। कल्पना नहीं करनी है। जो गुरु सिद्ध देह देते हैं, वह कल्पित नहीं है। वह मूर्ति जो है, निष्क्रिय रूप से गोलोक में विराजमान है, तो उस पर हमारे को meditate करना है, पहले conceptualise करना है। तो यही प्रगाढ़ होते-होते यह एक दिन physical रूप धारण कर लेगी। जब हमारी उत्सुकता इतनी बढ़ जाएगी, हम कृष्ण के बिना नहीं रह सकते तो तुरन्त देह भंग हो जाएगा और सीधा योगमाया हमें transfer कर देगी भौम वृन्दावन में। गोपी-गर्भ से हमारा जन्म होगा और एक साथ भी जन्म होता है कई भक्तों का, जो साथ में रहना चाहते हैं। तो कई facilities available हैं भगवान् के द्वारा अगर हम avail करना चाहें तो।

"जीव जागो, जीव जागो, गौराचाँद बोले, कोटि निद्रा याओ माया पिशाचीर कोले"

भूत, भूत लगा हुआ है, यही बोल रहे हैं वह। भूत लगा हुआ है तुम्हें क्योंकि भूत शुद्धि नहीं की।

"कोटि निद्रा याओ माया-पिशाचीर कोले,
जीव जागो, जीव जागो, गौराचाँद बोले,

कोटि निद्रा याओ माया-पिशाचीर कोले।"

We may not succeed immediately, I mean we should give it a good try, we should be honest in our endeavours.

अच्छा कैसे चिंतन करना है? हरिनाम से क्या सम्बन्ध है? कृष्ण। कृष्ण क्या हैं? माधुर्य सिंधु। ठीक है? आनंद सिंधु, सिंधु समझते हो? समुद्र... आनंद का समुद्र हैं और जैसे ही वह समुद्र राधारानी को देखता है, बिल्कुल हिलौरे खाने शुरु हो जाता है, बाढ़ आ जाती है उस समुद्र में। He becomes all more glamorous, all more attractive..., कामदेव, He is already Kāmadeva, but when He sees Rādhārānī, He becomes super attractive. और जब राधारानी कृष्ण को खुश होता देखती हैं, तो राधारानी की रूप माधुरी और उच्छवासित हो जाती है, और ज़्यादा। वह देखते हैं, कृष्ण का माधुर्य सिंधु और हिलौरे लेता है। इस प्रकार से कृष्ण becomes more attractive, Rādhārānī becomes more attractive and the story never ends, यह भी coma लगा है। फिर हमारा role आता है उसमें। फिर हमारा role क्या है? चारों और से हम लोग श्रृंगार रस में, श्रृंगार रस में हास-परिहास करते हैं राधाकृष्ण के साथ। कृष्ण! कहाँ थे अभी? और अलग-अलग natures के अनुसार, party..., its always a party time in Goloka... ऐसा नहीं है की they are doing meditation..., no! Its always a party time.... ससखी। हमें चिंतन करना है राधाकृष्ण का ससखी, हमेशा सखियों से घिरे हुए। *"कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन-वल्लभाय स्वाहा"*, ऐसे कृष्ण को स्वाहा, मैं सेवा में लगता हूँ। हाँ, तो क्या कर रहे हो? हास-परिहास।

मुझे भी लगा लो थोड़ा सा, इतने सबको लगाया है और party. एक लगाने से क्या हो जाएगा भाई? Just one more, put me in, I will do something nice... तेजस्त्रिक सेवा, मैं तेजस्त्रि सेवा करुँगी। नाचूँगी, गाऊँगी, बजाऊँगी, कुछ तो, कहीं तो सेवा में लगाओ। तो हम अपनी सेवा रस की आँधी से युगल माधुरी का जो सिंधु है इसको और उत्तालित कर देते हैं।

We should know our sevā precisely, what my sevā is? It is very important, otherwise we just cannot chant. We cannot do Gāyatrī. We cannot do Yogapīṭha, I mean we just cannot do anything, practically. It is so very vital.

"सखी विना एई लीला पुष्टि नाहि होए।
सखी विस्तारिया सखी आस्वादय।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला ८.२०३)

यह जो राधा कृष्ण की लीला है यह बिना सखियों के पुष्टि नहीं होती है और सखी इसका विस्तार करती हैं लीला का। सोचो, राधाकृष्ण अकेले बैठे हों, मान लो पूरा Meridian Hotel में क्या करेंगे बताओ बैठ के? कुछ भी नहीं कर सकते, कोई है ही नहीं। कितनी देर क्या करोगे बताओ? और जब friends होंगे वह भी कैसे? Envy वाले नहीं genuine friends, who really love you, who can die for you...

वास्तव में जो मंजरियाँ है न, अभिन्न देह अभिन्न प्राण कैसे होती हैं? जो मंजरियाँ हैं वे राधापादपद्म को छोड़ के स्वप्न में भी और कुछ नहीं चाहती हैं। इस भाव निष्ठा की वजह से राधारानी मंजरियों को अपने से अभिन्न समझती हैं, इस वजह से अभिन्न देह, अभिन्न प्राण होती हैं। राधारानी समझती हैं ये मेरे से अभिन्न हैं, क्यों? उनकी भाव निष्ठा की वजह से कि राधा चरण सेवा के अलावा वे स्वप्न में भी कृष्ण का अंग संग भी नहीं चाहती। इसी वजह से कृष्ण ललिता-विशाखा से ज़्यादा प्रेम मंजरियों को करते हैं। भावनिष्ठा की वजह से। सब कुछ भाव में है। इसलिए *"गोपीभाव करि अंगीकार"*, प्रारम्भ से।

सिद्ध देह में जितना हम अहम् रखेंगे उतनी जल्दी सिद्धि निकट होगी। सब कुछ अहम् पुष्टि पर है, false ego से real ego पर आना है। This is the entire story! जितनी बार भी हम कथा सुन लेंगे ultimately इसी conclusion पर आना पड़ेगा। We have to come out of false ego, बस simple... भक्ति इतनी simple है, यदि रखना चाहें और complicate करना चाहें, "अरे पता है, नहीं practical नहीं है।" अरे, क्या practical नहीं है?

मुझे अगर कोई बोले कि भक्ति difficult है और वह भी कोई संसारी व्यक्ति तो इस बात को मैं कभी भी नहीं मान सकता। अरे, तुम संसार में रहते हो, तुम अपनी पत्नी के साथ रह सकते हो, तुम अपने बच्चों के साथ रह सकते हो, अपने माँ, अपने बाप के साथ रह सकते हो, और तुम भक्ति नहीं कर सकते, यह कैसे हो सकता है? इतना मुश्किल काम तुम कर सकते हो और भक्ति नहीं कर सकते? इससे आसान काम और कोई नहीं है, और इससे मुश्किल काम कोई नहीं है। एक अपना भूत मन control होता नहीं और एक वह साथ partner है तो दो भूत। उसके बाद दो-दो छोटे भूत। चार भूत

इकट्ठे रह रहे हैं। तुम जब यह काम, रोज़ काम करने जा सकते हो, नौ (९) से रात के नौ। ऐसा कौन सा तपस्या है जो तुम नहीं करते? सारी तपस्याएँ कर रहे हो, तो सिद्ध देह में भावना करना कौन सी तपस्या है? इससे तो आसान काम भी कोई नहीं है।

जो व्यक्ति संसार में रहता है वह बोले, "मैं भक्ति नहीं कर सकता"..., तुम, तुम्हें भूत चढ़ा हुआ है, भूत शुद्धि नहीं हुई तुम्हारी। कभी किसी को मत बोलना यह मुश्किल है, तो जो तुम कर रहे हो वह इससे भी ज़्यादा मुश्किल है। वो वज़न उठाना क्या है? कितना वो दो सौ (२००) किलो। तुम अभी सतरह सौ (१७००) किलो वज़न तो तुम वैसे ही उठाते हो, (१०३) बुखार में भी, यह तो सिर्फ छोटा सा २०० किलो वज़न उठाना है, छोटा ज़रा सा। सोचा..., उठ गया। Its all here, मुश्किल है यहाँ, आसान है यहाँ, सब यहीं है। जैसा साधुसंग मिलेगा, उत्साहित भक्तों का तो उत्साहित रहोगे। ऐसी शक्ल वाले तुम लोग, वैसे ही साधु संग मिलेगा। कैसे? Birds of the same feather, flock together. All dumbos they flock together and if you are really उत्साहित and you get..., you are going to get, you will get certainly उत्साहित devotees..., they will take you where they are going. This life only. इसी, इसी जीवन में, अगला जीवन सोचना भी नहीं है material... "वह अगले जीवन में क्या होगा?" अरे तुम, तुम पागल हो क्या? भूत चढ़ा हुआ है न अभी भी। Why to think about next life? अभी कम सरदर्द है यह?

Such a big austerity और कहते हैं अगला जीवन भी very good..., hats off to your foolishness... कैसी Chanting हमारी ठीक होगी, जब हम इतने कष्ट में रहने के बाद भी हृदय से भगवान को नहीं बुलाएँगे तो? Can't cry for Kṛṣṇa... look Kṛṣṇa, I am really struggling, I am really...

अब हम फिर - I am दुःखी, मैं रोज़ दुकान पर जा..., इससे बड़ा दुःख और क्या होगा बताओ? छः (६) घण्टे सोए, खाना खाया, फिर पहुँच गए वहीं। रात को आए रोटी खाई, सो गए, फिर वहीं पहुँच गए। अरे भाई बताओ इससे बड़ी austerity किसकी कहाँ से बताओ। *"भूत शुद्धिं विशोधनम्"*, इसकी शुद्धि बहुत आवश्यक है।

जो राधाकृष्ण के जो दर्शन का जो आनंद है निकुंज में, उसके आगे हमारे सारे के सारे भगवद् सुख जो हैं - सारे वैकुण्ठ, गोलोक, जितने भी भगवद् सुख हैं वे सारे सुख को एक तरफ़ कर दो और राधाकृष्ण के दर्शन का जब वे निकुंज में हैं तो एक तरफ़ कर दो, तो जो सारे सुख है भगवद् सुख, वह एक लवलेश मात्र भी नहीं हैं राधाकृष्ण के दर्शन

के। उद्धव बेवकूफ नहीं हैं जो बोल रहे हैं, "मुझे, मुझे ब्रज में घास का तिनका बना दो, कुछ भी बना दो।" उद्धव भगवान् के समान देखने में हैं, इतना close relationship है उद्धव का भगवान् से फिर भी, उन्हें मालूम है कि राधारानी का क्या प्रेम है, विभू आस्वादन है। हमारा नाम भले ही अनु हो पर हमारा goal विभू होना चाहिए। Goal विभू आस्वादन है।

कृष्ण कितना, कितना कृपामय हैं -

"कृष्ण गुरु रुपे दीक्षा देन घरे-घरे, वैष्णवरुपेते देय शिक्षा।
शास्त्ररुपे कहे ज्ञान, आत्मारुपे अधिष्ठान, देखो ताँर कारे बा उपेक्षा"

कृष्ण गुरु रुप में, घर-घर में दीक्षा देते हैं और वैष्णव रुप में, घर-घर में शिक्षा देते हैं। भगवान् की जो कृपा है दो धाराओं से आती है। कौन सी हैं वह दो धाराएँ? "श्री गुरु और श्री वैष्णव", दोनों ही बहुत महत्वपूर्ण हैं। गुरु मंत्र दे रहे हैं और कोई शिक्षा दे रहा है, तो यह कृपा हमारे ऊपर आ रही है। कृष्ण कंजूसी नहीं कर रहे हैं। अब यह है कि हम बारिश आ रही हम कितनी लेना चाहते हैं।

वैराग्य जो है बहुत रसमय जीवन है, वैराग्य is never dry. If there is genuine वैराग्य, तो वह रसमय है। त्याग can be dry because कुछ प्राप्ति नहीं हो रही but वैराग्य is never dry, वैराग्य तो, it is always आहा ! I mean you are leaving something, getting something better, otherwise वैराग्य हो नहीं सकता। तभी तो होता है नहीं तो मायावादी के क्या पतन हो जाता है। क्यों, मिला ही कुछ नहीं था। थोड़े दिन छोड़ दिया ठीक है फिर desire हो गया, हाय, हाय, हाय। Come back to 84 lakh species. यहाँ ऐसा नहीं है, वैराग्य हुआ, रसमय हुआ जीवन, साथ-साथ।

This is the beauty of Kṛṣṇa, He is Dīkṣā Guru and He is Śikṣā Guru.

"कृष्ण गुरु रुपे दीक्षा देन घरे-घरे", as a Dīkṣā Guru, then He gives also Śikṣā. कैसे? सबसे पहले तो हमारे हृदय में क्या करते हैं कृष्ण? हम तो dry हैं, हमारे से dry तो कुछ हो ही नहीं सकता। Dry words भी हमारे से ज़्यादा रसमय है, हमारा हृदय तो इतना dry है। कृष्ण पहले हमारे हृदय में सेवा वासना डालते हैं। कैसे? गुरु और वैष्णवों की कृपा से, सेवा वासना कर लो न थाड़ी सी सेवा कर लो न..., सेवा वासना। फिर अंत में जब हमारी अच्छी तरह उत्कण्ठा हो जाती है तो फिर सेवा दे हमें कृतार्थ कर देते हैं। You are seeing the beauty of Kṛṣṇa? पहले सेवा वासना जगाते हैं, हममें तो आएगी

नहीं अपने आप। अपने आप सब कुछ अपने आप कुछ नहीं आता। अपने आप चवन्नी आई है किसी के घर में आज तक? तो सिद्ध, अपना सिद्ध स्वरुप अपने आप आ जाएगा उड़ कर? इष्ट स्वरुप, सिद्ध स्वरुप, सब कुछ अपने आप आ जाएगा? कुछ भी नहीं आएगा। तो कृष्ण पहले सेवा वासना जगाते हैं और अंत में फिर सेवा दे कृतार्थ करते हैं जीव को सदा-सदा के लिए। इसी को कहा जाता है तैत्तिरीय उपनिषद् में -

"रसं ह्य एवायं लब्धवानन्दी भवति।"

(तैत्तिरीय उपनिषद्-२.७.१)

खुद को दे कर जीव को, *आनन्दी भवति,* कृतार्थ कर देते हैं, सदा-सदा के लिए।

ठीक है, I think this is all for the day... अगर आपका कोई प्रश्न है तो we can take...